B.A Part (I)
Economics Hons
Paper II
Macro Economics

Munmun Choudhary
Asst. Prof.
Department of Economics
A.S. College
Bikramganj

Topic :- आर्थिक व्यवस्था में मुद्रा की भूमिका (Role of Money in Economy)

वर्तमान युग में मुद्रा समस्त आर्थिक क्रियाओं का प्रेरणा और आर्थिक जीवन का एक महत्वपूर्ण आधार है। यदि अर्थव्यवस्था एक मशीन है तो मुद्रा उस मशीन को चालु रखने वाला शक्ति है। मार्शल (Marshall) के अनुसार "मुद्रा वह धुरी है जिस पर अर्थविज्ञान चक्कर लगाता है।

मनुष्य की आवश्यकताएँ अनगिनत अथवा असीमित है परन्तु उनको पूरा करने के लिए उसके पास साधन सीमित है। ये साधन सीमित ही नहीं है, उनके विभिन्न वैकल्पिक प्रयोग (alternative uses) भी है। प्रत्येक व्यक्ति यह चुनाव अथवा निर्णय करता है कि उसे कौन-सी आवश्यकताएँ पहले पूरी करनी है और कौन सी बाद में। इस चुनाव करने की प्रक्रिया को ही वाँकिस ने आर्थिक समस्या कहा है। इस प्रकार चुनाव अथवा निर्णय मुद्रा के माध्यम से निर्धारित कि गई कीमतों के द्वारा ही किया जाता है इन्हीं के आधार पर समाज में उत्पत्ति एवं उपभोग, राष्ट्रीय आय और रोजगार (National Income and Employment) आदि की मात्राएँ निर्धारित होती है।

Scanned by TapScanner

राबर्टसन के अनुसार, "मौद्रिक अर्थव्यवस्था (Economy) का होना समाज को यह जानने में सहायता देना है कि लोग क्या चाहते है और कितना चाहते है। ताकि यह निश्चित किया जा सके कि क्या और कितना उत्पादन करना होगा जिससे कि सीमित उत्पादन की शक्ति और साधन का अनुकूलतम उपयोग हो सके।

चूँकि प्रत्येक आर्थिक कार्य, वस्तु या घटना को मुद्रा द्वारा मापा जाता है इसलिए देश की आर्थिक प्रगति को भी मुद्रा द्वारा मापा जा सकता है। आर्थिक व्यवस्था सुव्यवस्थित है या अस्त-व्यस्त इसका अनुमान भी देश की मुद्रा प्रणाली द्वारा लगाया जा सकता है। मुद्रा आर्थिक व्यवस्था का नियंत्रण भी करती है, सत्य तो यह है कि यदि आज मुद्रा न होती तो मानव का आर्थिक विकास उस शिखर तक कभी नहीं पहुँच पाता जिस पर आज के युग में वह औद्योगिकरण एवं आर्थिक सहयोग की सहायता से पहुँच चुका है। प्रो० पीगु (Prof. Pigou) ने ठीक ही कहा है कि, "आधुनिक युग में उद्योग मुद्रा रुपी वस्त्र धारण किये हुए है।" मार्शल (Marshall) ने मौद्रिक अर्थव्यवस्था के इतिहास को मानव-सभ्यता के इतिहास से सम्बन्धित किया है। वास्तव में, मुद्रा के महत्व या भूमिका का अनुमान तो तभी लगाया है जब किसी भी देश अथवा काल में असंगठित मौद्रिक प्रणाली के प्रभावों देख जाय। क्रैस्कौत के अनुसार, "यदि मुद्रा हमारे अर्थ-तन्त्र का हृदय नहीं तो रक्त-स्रोत अवश्य है।"

Scanned by TapScanner

* आर्थिक क्रियाओं के क्षेत्र में मुद्रा का महत्व या भूमिका

आर्थिक क्रियाओं के क्षेत्र में मुद्रा का महत्वपूर्ण स्थान है, इन क्रियाओं में मुद्रा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। उत्पादन, उपभोग, विनिमय वितरण तथा राजस्व से सम्बन्धित किसी भी क्रिया अथवा समस्या को देखा जाय तो स्पष्ट हो जायेगा कि उस क्रिया की प्रकृति तथा समस्या के स्वरुप और आकार में या पर मुद्रा का बहुत अधिक प्रभाव आर्थिक क्रियाओं के विभिन्न क्षेत्र मे मुद्रा की महत्व अथवा भूमिका का विश्लेषण निम्नवत् है :-

(1) उत्पादन के क्षेत्र में :-

(i) आर्थिक हिसाब के आधार पर ही उत्पादन सम्बन्धी निर्णय किये जाना हो, जिसमें मुद्रा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि आर्थिक हिसाब मुद्रा के माध्यम से ही होता है।

(ii) श्रम विभाजन एवं विशिष्टीकरण, जो आर्थिक प्रगति के आधार है मुद्रा के प्रयोग द्वारा ही सम्भव हुए है, बेनहम के अनुसार, "आधुनिक जीवन जो विशिष्टीकरण पर आधारित है, मुद्रा के अभाव में सम्भव नहीं होगा।"

(iii) मुद्रा पूँजी का सबसे तरल रुप होने के कारण पूँजी को गतिशीलता प्रदान कर उसे अधिक उत्पादक बनाती है।

Scanned by TapScanner

(iv) अधिकतम उत्पादन के लिए मुद्रा उत्पत्ति के साधन जुटाने में सहायक होती है। केवल यही नहीं, मुद्रा की सहायता से ही उत्पादक प्रतिस्थापन नियम के अनुरूप विभिन्न साधनों का अनुकूलतम संगठन कर पाता है।

(v) अधिकतम उत्पादन के लिए द्वारा ही सम्भव होते हैं और इसके ही आधार पर पूँजी का निर्माण होता है।

(2) उपभोग के क्षेत्र में :-

(i) मुद्रा की सहायता से उपभोक्ता की सत्ता बनी रहती है, वह व्यय तभी करता है जब उसकी इच्छानुसार उसे अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ प्राप्त होती है।

(ii) मुद्रा ने विनिमय - कार्य सरल बना दिया है जिससे उपभोक्ता को प्राप्त होने वाली वस्तुओं की संख्या एवं मात्रा बढ़ गयी है। साथ में उत्पादन करते समय उपभोक्ता की रुचि को ध्यान में रखा जाता है।

(iii) सम - सीमान्त उपयोगिता नियम का पालन करने में भी मुद्रा सहायक होती है जिससे उपभोक्ता को अपना व्यय से अधिकतम संतोष प्राप्त होता है।

Scanned by TapScanner

(3) विनिमय के क्षेत्र में :-

(i) मुद्रा वस्तु विनिमय प्रणाली के दोषो को दूर कर विनिमय को सुगम बनाती है।

(ii) मुद्रा के द्वारा भावी सौदे (Future transactions) वर्तमान में किये जाते हैं जिनके अन्तर्गत भावी कीमत वर्तमान कीमत मे ही निश्चित हो जाती है।

(iii) मुद्रा कीमत संयंत्र (Price mechanism) का आधार जिसके अनुसार समस्त आर्थिक निर्णय समायोजित होते है।

(iv) मुद्रा के प्रयोग से राष्ट्रीय एंव अन्तराष्ट्रीय व्यापार मे वृद्धि हुई है।

(v) साख का निर्माण तथा प्रयोग में भी मुद्रा की भुमिका सबसे महत्वपूर्ण है यह मुद्रा पर ही आधारित है।

(4) वितरण के क्षेत्र में :— उत्पत्ति के प्रत्येक साधन का पारिश्रमिक अथवा पुरस्कार निर्धारित करना तथा उत्पादन पूर्ण होने और बिक्री के

Scanned by TapScanner

पहले विभिन्न साधनों के पारिश्रमिक की अदायगी मुद्रा के रूप में होती है।

(3) राजस्व के क्षेत्र में :- राजस्व के क्षेत्र में मुद्रा अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राज्य - वित्त का महत्वपूर्ण साधन कर (taxes) तथा लोक - ऋण (Public debt) है जो मुद्रा के रूप में प्राप्त होती है। राज्य अपना व्यय भी मुद्रा के रूप में ही निर्धारित करता है। मुद्रा के बिना सरकार का बजट निर्माण असंभव है।

स्पष्ट है कि ~~आर्थिक~~ व्यवस्था के समस्त आर्थिक क्रियाओं के संचालन में मुद्रा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

Scanned by TapScanner